CLASS-09: Summary

1. हमने जाना कि सातवीं प्रकार के व्यंतर देव **भूत** जाति के होते हैं
    - और इनके इंद्र **प्रतिरूप** और **अप्रतिरूप** होते हैं
    - **प्रतिरूप** भूत जाति के देव प्रतिरूप यानि वैसा ही रूप बनाने में कुशल होते हैं
2. आठवें प्रकार के व्यंतर देव **पिशाच** जाति के होते हैं
3. अक्सर पिशाचों को श्मशान घाट पर नाचने वाला
    - dead body का उपयोग करने वाला
    - माँस इत्यादि खाने वाला माना जाता है
4. लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता है
    - इन्हें सिर्फ डराने में मजा आता है
    - मनुष्यों को भगाना, इनके कौतुक हैं
5. पिशाच जाति के इन्द्र हैं - **काल** और **महाकाल**

6. अब हम जानते हैं कि पिशाच, भूत सब होते हैं
    - लेकिन ये बिना वजह किसी के लिए कुछ बाधा नहीं करते हैं
7. ये नहर, गुफा, किनारे, पर्वत, एकान्त स्थान, शून्य स्थान, पेड़ के नीचे आदि स्थानों पर क्रीडा करते हैं
    - हमें उन स्थानों पर जाने से पहले कुछ सावधानियाँ बरतनी चाहिए
    - नहीं तो ये हमें परेशान करते हैं या पीछे पड जाते हैं
8. ऐसे किसी स्थान पर घुसने, खेलने-कूदने से पहले
    - हमें **निःसहि निःसहि निःसहि** बोलना चाहिए
    - और लौट कर जाने पर **अस्सहि अस्सहि अस्सहि** कहना चाहिए
    - ये सम्मान सूचक शब्द हैं और ये उन्हें सतर्क करते हैं

- महिलायें अशुद्धि के दिनों में ऐसे स्थानों पर न जाएँ
- वट, पीपल के वृक्ष के नीचे गन्दगी न करें

9. सावधानी न रखने से इस तरीके की बाधाएँ होना स्वाभाविक है

10. व्यन्तर देव वैमानिक देवों की अपेक्षा छोटे होते हैं
    - यानि इनमें विक्रिया करने की शक्ति, सामर्थ्य कम होती है
    - उत्कृष्ट विक्रिया में भी ये एक साथ सौ रूप ही बना सकते हैं

11. दस हजार वर्ष आयु वाला **व्यन्तर देव** सौ मनुष्यों को पछाड़ सकता है
    - और **एक पल्य आयु वाला देव भी**, छह खण्ड में भी उथल-पुथल मचा सकता है
    - वैमानिक देवों की सामर्थ्य बहुत बड़ी होती है
    - सौ आदमी से ज्यादा बल तो नारायण, चक्रवर्ती आदि महापुरुषों में भी होता है
    - और ये व्यन्तर उन महापुरुषों के दास होते हैं

12. जहाँ वैमानिक देवों की आयु सागरों में, पल्योपम होती है
    - व्यंतर देवों की minimum आयु दस हजार वर्ष
    - और अधिकतम आयु एक पल्य होती है

13. दस हजार वर्ष आयु वाले भवनवासी और व्यन्तर **दो दिन के अन्तराल में** मानसिक आहार करते हैं
    - और सात श्वासोच्छवास के बाद एक श्वास लेते हैं
14. पल्यप्रमाण आयु वाले देव पाँच दिन बाद आहार करते हैं
    - और पाँच मुहूर्त के बाद श्वास लेते हैं

15. व्यन्तरों का मूल शरीर काले रंग ही होते है
    - सिर्फ किम्पुरुषों का स्वर्ण
    - और किन्नरों का प्रियंगु फल यानि जामुन जैसा नीले रंग का होता है
16. श्यामल होते हुए भी इनका शरीर आभावान होता है
17. ये विक्रिया द्वारा उत्तर शरीर से तरह-तरह के भेष बनाकर डराते हैं

18. हमने सभी देवों के सामान्य स्वरूप को भी जाना
    - इनके समचतुरस्र-संस्थान होता है
    - इनका हुलिया या आकृति बुरी नहीं होती
    - और न दाँत और जुल्फें बाहर निकलते
19. ये मूल में अच्छे, सुन्दर और आकर्षक होते हैं
    - और अपनी क्रीड़ाओं में मस्त रहते हैं

20. हमें व्यन्तर देवों के अन्दर की शक्ति को जानकर
    - इनसे डरना नहीं चाहिए